ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 68 | अंक 12 | अगस्त 2021 | श्रावण 2078 | वार्षिक मूल्य 150 रु०

श्रावणी पर्व का निमन्त्रण

22 अगस्त रविवार 2021 ई०

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में प्रतिवर्ष श्रावणीपर्व धार्मिक समारोह पूर्वक मनाया जाता है। इस पर्व के उपलक्ष्य में वेद और वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय के लिए श्रोताओं को प्रेरित किया जाता है। जो व्यक्ति गुरु परम्परा से वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त नहीं कर पाया हो, उसे श्रावणी के पर्व पर वेदादि ग्रन्थ उपलब्ध कराकर स्वाध्यायशील बनने के लिए उत्साहित करते हैं। पुराने यज्ञोपवीत के स्थान पर नूतन यज्ञोपवीत धारण करने की परम्परा भी इसी अवसर पर प्रचलित है।

स्वाध्याय के लिए प्रेरणा देने के साथ-साथ दैनिक यज्ञ करने की प्रतिज्ञा करने तथा दुर्व्यसन त्याग करने के लिए भी प्रेरणा की जाती है। यदि व्यक्ति प्रतिवर्ष एक दुर्गुण छोडने और एक सद्गुण धारण करने का नियम कर लेता है तो पूरे जीवन में देवत्व को प्राप्त कर सकता है। साथ ही अपनी सन्तति को भी देवकोटि में प्रविष्ट कराने का मार्ग प्रशस्त कर लेता है। वेद का आदेश है मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। स्वयं मनस्वी बनो और अगली पीढी को देव बनने की प्रेरणा करो।

गुरुकुल झज्जर से संबद्ध तथा इसके प्रति आस्था रखने वाले सज्जनों का यह सौभाग्य है कि आज के इस दूषित वातावरण में भी आप को जीवन को उत्तम बनाने के लिए अवसर मिलता रहता है। अतः इस अवसर पर आप अपने परिवार सहित पधार कर धर्मोपदेश सुनें तथा तदनुसार आचरण करके जीवन को सफल बनायें।

निवेदक

आचार्य विजयपाल योगार्या	प्रधान वी० पूर्णसिंह देशवाल	मन्त्री राजवीरसिंह ठिकारा
9416055044	8053178787	9811778655

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० साहिल आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :68 अंक : 12
अगस्त 2021 विक्रमाब्द 2077
दयानन्दाब्द 196 कलिसंवत् 5121
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,121

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	अन्न संग्रह व दान सूची	4
4.	पुराने पत्रों के संदर्भ में	16
5.	रक्षा बन्धन से चलेगा...	17
6.	शोक सन्देश	19
7.	ब्राह्मणों की मान्यता...	20
8.	आर्य दैनन्दिनी...	23
9.	गुरुकुल झज्जर की विशेषता	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क 150 रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम्।
हृद्भिः मन्द्रेभिःरीमहे।।

ऋ० ८, ४३, ३१।।

विनय

यह अग्निदेव मन्द्र है, हर्षित कर देने वाला है। यह ऐसा मन्द्र है, ऐसा मस्त कर देने वाला है कि इसके दर्शनमात्र से हममें आनन्द की लहरें चल उठती हैं। इसीलिये यह अग्नि बहुत प्यारा है। सब तरह से प्यारा है, और असल में सब का प्यारा है। परन्तु यह अग्नि हममें सोया पड़ा है। यह पवित्र दीप्ति अग्नि हममें सोया पड़ा है। इसकी शोचि, इसकी ज्योति इतनी पवित्रताकारक है कि यदि यह हममें जग जावे तो नख से शिख तक पवित्र कर देवे, हमारी नस-नस को, हमारे रोम-रोम को पवित्र कर देवे, बल्कि हमारे प्राण और मन के एक एक परमाणु को पवित्र कर देवे। पर हा! यह हममें जग नहीं रहा है, सोया हुआ है इसे कौन जगावे? इसे कैसे जगावे? ओह, यह मन्द्र अग्नि मन्द्रों द्वारा ही जगाया जा सकता है। इसे जगाने के लिये हृदय चाहियें और मन्द्र हृदय चाहियें। आओ, भाइयो! हम अपने मन्द्र हृदयों द्वारा इस मन्द्र परमात्मा को अपने में प्रात कर लेवें, प्रबुद्ध कर लेवें। ये देखो भक्त लोग अपने उन भक्ति भाव भरे हृदयों द्वारा जो प्रभु वाणी सुनकर मोर की तरह आनन्द मस्ती में नाच उठते हैं, अपने हृदय के उन कोमल मनोभावों द्वारा जो हरिनाम का स्मरण हो आते ही हमें रोमांचित और पुलकित कर देते हैं और अपने अन्तःकरण के उन मनोवेगों द्वारा जो प्रभु का हार्दिक अनुभव करके हमें आनन्दाश्रुओं में रुला देते हैं, अपने मन्द्र प्रभु को नाना तरह से जगा रहे हैं, नाना तरह से रिझा रहे हैं। आओ, हम भी क्यों न इसीतरह इस मन्द्र अग्नि को अपने में जगावें और अपने मन्द्र हृदयों द्वारा इसे प्रतिदिन रिझावें?

शब्दार्थ-

(पुरुप्रियं) बहुत प्यारे और (पावकशोचिषं) पवित्र ज्योति वो (शीरं) किन्तु सोये पड़े हुए (मन्द्रं) मस्ती देने वाले, हर्षित करने वाले, आनन्दरूप (अग्निं) परमात्मा को हम (मन्द्रैः) मादन, हर्षित होने वाले ही (हृद्भि) हृदयों से (ईमहे) चाह रहे हैं, प्राप्त करना चाह रहे हैं।

सम्पादकीय

पराधीनता और फूट से हानि

संवत् १९३६ (सन् १८७९) में अफगानों और अंग्रेजों के बीच युद्ध हो रहा था, उस युद्ध में यद्यपि अफगान पराजित हो रहे थे। पुनरपि वे छिपकर आक्रमण करते ही रहते थे। इस विषय में महर्षि दयानन्द जी अपने पुस्तक संस्कृ वाक्य प्रबोध में लिखते हैं-

पराजित होकर भी यवन उपद्रव नहीं छोड़ते। यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव होता है कि जब कोई उनके घर आदि को छीनना चाहता है तब वे यथाशक्ति युद्ध करते ही हैं।

यहां महर्षि जी पराधीनता के दु:ख और स्वतंत्रता के सुख के परिणाम से व्यंजन के रूप में यह संदेश देना चाहते हैं कि पशु-पक्षी भी जब अपने घर को आसानी से नहीं छोड़ते तो स्वाभिमानी पुरुष अपने देश पर विदेशियों के अधिकार को कैसे सहन कर सकते हैं। जब स्वाभाविक ज्ञान रखने वाले पशु पक्षियों की यह अवस्था है तो नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करने वाले और स्वतंत्र रहने की भावना वाले व्यक्तियों के घर, प्रांत, देश आदि को जब कोई विदेशी व्यक्ति बलात् और अन्यायपूर्वक छीनना चाहता है तो वह अपने घर आदि की रक्षा हेतु अनेक प्रकार के उपाय अपनाता है। जैसे पहले तो ऐसी कुचेष्टा करने वाले को वह समझाता है कि ऐसा करना अन्याय और अनैतिक है। यदि इससे भी वह नहीं मानता और बलवान् तो उसे युद्ध करता है और अवसर मिलते ही जैसे-तैसे उपाय करके उसे मृत्यु का ग्रास तक बना देता है। यदि यह उपाय सफल नहीं हो पाता है और प्रतिपक्षी अधिक बलवान् और छली कपटी है और अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके बलपूर्वक अधिकृत किये गये स्थान को नहीं छोड़ता और उस स्थान के मूलस्वामी को अनेक प्रकार की यातनायें देकर मारने से भी संकोच नहीं करता।

यही अवस्था भारत की भी हजारों वर्षों से होती आई है। महाभारत युद्ध के पश्चात् जब देश खण्डित होकर अनेक क्षेत्रीय राज्यों में बंट गया तो विदेशी लोभी और अत्याचारियों ने भारत पर आक्रमण करके यहां की सम्पत्ति और वैभव को लूटकर यहां अधिकार करके अपना राज्य स्थापित कर लिया। जिसने इनके इस अनैतिक कर्म का विरोध किया उनकी हत्यायें की, फांसी पर लटका दिये, ग्राम और खेती तक जला दी, माताओं-बहनों से दुराचार तक किया और लोभ तथा भय दिखाकर अपने मत-सम्प्रदाय में प्रविष्ट भी किया। ऐसे लुटेरे और आततायी लोगों के उदाहरण स्वरूप कुछ नाम दिये जाते हैं।

जैसे-हूण, यूनानी, शक, क्षत्रप, हूण, पार्थियन, शसेनियन, तुर्क, खिलजी, तुगलक, पठान, मुगल, पुर्तगाली और अंग्रेजों ने यथा अवसर क्षेत्रीय तथा पूरे देश पर शासन स्थापित करके यहां की संस्कृति, सभ्यता, आचार-व्यवहार, कला कौशल, शिल्प, कृषि और

वाणिज्य को नष्ट करने में कोई न्यूनता नहीं छोड़ी। इस काम में उन्होंने अनैतिकता के साथ यहां के निवासियों में फूट डालकर भी अपन स्वार्थ पूरा किया। भारतीय शासकों में फूट के कारण एकता का अभाव तथा अपने राज्य से बाहर वाले राज्यों की चिन्ता न करना और यदि पड़ोसी राज्य के साथ अधिक कटुता है तो उसे पराजित करने के लिये विदेशी शत्रु के साथ मिलने में भी संकोच नहीं किया। पड़ोसी चाहे पराधीन हो जाये, पर मेरा राज्य सुरक्षित रहे। इसी अदूरदर्शिता के कारण विदेशी एक के बाद दूसरे-तीसरे राज्य को हथियाते गये और पूरा देश हस्तगत कर लिया।

यद्यपि समय-समय पर देश की ऐसी परिस्थिति रही है परन्तु इन आक्रमणकारियों का सामना करने वाले स्वतन्त्रताप्रिय वीर भी होते रहे हैं।

जैसे-यौधेय, कुणिन्द, आर्जुनायन, औदुम्बर, क्षुद्रक, मालव, आग्रेय आदि गण, महामति चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, यशोधर्मा, हर्ष, मिहिरभोज, पृथ्वीराज चौहान, हम्मीरदेव, महाराणा सांगा,, महाराणा प्रताप,, वीर हेमू, छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बैरागी, महारानी लक्ष्मीबाई, महाराजा सूरजमल, राव तुलाराम, घोरतम कष्ट सहने वाले वीर सावरकर आदि तीनों भाई, सुभाष चन्द्र बोस, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद तथा हजारों क्रान्तिकारी वीरों ने अपने-अपने समय में विदेशी आक्रमणकारी और अत्याचारियों का प्रबल विरोध करके स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु और विदेशियों को भारत से बाहर निकालने में अपने जीवन की आहुतियां प्रदान कर दी। निरपराध मारे गये लाखों अज्ञात वीरों का भी इस पुण्य कार्य में कम योगदान नहीं है।

आज हम भारतीय जिस स्वतंत्रता का उपभोग कर रहे हैं उसमें उपर्युक्त वीरों और जल-नभ-थल की सेनाओं के सैनिकों की प्रमुख भूमिका रही है। वर्तमान सैनिकों की तपस्या और सेवाभाव के द्वारा भारत की सीमायें सुरक्षित हैं। मुसलमानों और अंग्रेजों के शासन के समय जो सैंक़ड़ों नवाब, राजा, महाराजा, राणा, महाराणा, अंग्रेजों से सर आदि अनेक प्रकार की उपाधियां प्राप्त व्यक्ति यदि निजी लाभ छोड़कर एकजुट हो जाते तो इन विदेशियों को भागना पड़ता। हमारे राजा महाराजा एकजुट तो हो जाते थे परन्तु कब, जब सम्राट या उसके उत्तराधिकारी दरबार लगाते थे, तब उनकी जीहजूरी करने के लिये उनकी आंखों के सामने हाजरी लगाते थे।

उस समय उनकी आत्मा से देशभक्ति के भाव सर्वथा लुप्त रहते थे। क्योंकि उन्हीं दरबार करने वालों की कृपा से उन सब के रजवाड़े सुरक्षित थे। इन्हीं की आड़ में प्रजा पर कोई ध्यान न देकर अपना भोग विलासमय जीवन सुखपूर्वक बिताने में ही जीवन की सफलता समझते थे।

आपसी फूट, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य और स्वार्थ का जो रोग महाभारत युद्ध से शुरू हुआ था, वह अब असाध्य रूप धारण कर चुका है। एक हिन्दू पर जब कोई अत्याचार करता है तो दस लोग खड़े होकर तमाश देखते रहते हैं या वहां से चुपचाप खिसक जाते हैं कि कहीं

गवाही न देनी पड़े। अत्याचारी को रोकने का कोई प्रयत्न नहीं करता। इससे तो अच्छे बन्दर और कौवे हैं, एक बन्दर को मारो तो बन्दरों का झुण्ड इकट्ठा हो जाता है, कोई घुड़की देता है, कोई काट खाने को दौड़ता है। एक कौव को मारोगे तो सैंकड़ों कौवे एकत्र होकर कांय-कांय करके मारने वाले को परेशान कर देते हैं। उसके सिर पर पंजों से झपट्टा तक मारते हैं।

यह फूट केवल राजनैतिक रूप से ही नहीं है अपितु धार्मिक रूप से भी विषाक्त रूप धारण किये हुये हैं। रोमनकैथोलिक, प्रोटेस्टेण्ट, यहूदी, शिया, सुन्नी, आर्य, पौराणिक, नानकपंथी, निहंग, कबीर पंथी, शैव, वैष्णव, राधास्वामी, रामस्नेही आदि सैंकड़ों मत सम्प्रदाय वाले, भारतीय अनेक जातियां, गोत्र, पृथक्-पृथक् प्रान्तीयता भिन्न-भिन्न भाषा आदि के रूप में मानव जाति बिखरी पड़ी है। जब तक एक भाव, एक भाषा, एक सर्वमान्य संस्कृति नहीं होगी, तब तक विश्व में शांति होना असम्भव है।

इनमें देश सर्वोपरि होता है। इसकी सुरक्षा और एकता के लिये निजी स्वार्थ का त्याग करके देश और मानवता को प्राथमिकता देनी चाहिये। अन्यथा अलग-अलकग रहकर पिटते रहेंगे और पड़ोसी की हानि देखकर प्रसन्न होकर अपनी भी बारी आयेगी इसकी चिन्ता नहीं करते। एक के पिटने पर यदि हम चुप रहते हैं तो अगली बार हमारी बारी आनी अनिवार्य है, अत: परस्पर सहयोग की भावना होनी आश्यक है। ईश्वर सभी को ऐसा सामर्थ्य और अन्त:करण में प्रेरणा प्रदान करे जिससे सर्वत्र सुख-शांति का साम्राज्य बना रहे।

-विरजानन्द दैवकरणि, ९४१६०५५७०२

अन्न-धन दाताओं को धन्यवाद

गुरुकुल झज्जर विगत १०५ वर्षों से लगातार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, संस्कृति, सभ्यता, आचार, व्यवहार, जनजागरण, कुरीति निवारण, दुर्व्यसन छुड़ाना, पाखण्ड का निराकरण करना, उत्तम स्वास्थ्य बनाना, गोरक्षा करना आदि शुभ कार्यों में संलग्न है। इस कार्य में स्थानीय जनता का सहयोग भी रहता है। परन्तु इस समाज में विभिन्न प्रकृति के लोग सदा ही रहे हैं। उनमें कुछ अज्ञानी, स्वार्थी तथा अन्तर्द्वेषी लोगों ने इस बार अपनी कुटिल चाल के द्वारा यह यत्न किया कि गुरुकुल की अन-धन से सहायता नहीं की जाये। उनके प्रयत्न करने पर भी अनेक सज्जनों ने गुरुकुल की सहायता करना अपना नैतिक कर्त्तव्य माना। कोरोना महामारी और लॉकडाऊन के कारण अप्रैल-मई में सभी ग्रामों से सम्पर्क नहीं किया जा सका। पुनरपि कोरोना महामारी के होते हुए भी सामाजिक दूरी और नियमों के पालन को दृष्टिगत रखते हुए अपने सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और गोशाला के लिए अन्न और धन से प्रभूत सहायता की है ऐसे दानी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे सज्जनों द्वारा प्रदत्त अन्न-धन की सूची नामसहित प्रकाशित की जा रही है। इससे प्रेरणा लेकर अन्य व्यक्ति भी सहयोग कर सकते हैं। विरोधी लोग इसलिये प्रसन्न हैं कि हमारी हठधर्मी के कारण इस बार

गुरुकुल को सरकारी सहायता नहीं मिली। परन्तु समय सदा एक-सा नहीं रहता। नि:स्वार्थ भाव से किये गये पवित्र कार्यों में ईश्वर की कृपा बनी रहती है, अत: धैर्य का त्याग नहीं करना चाहिये। इसीलिये गुरुकुल भी धैर्य का अवलम्बन करके अपने पथ पर अग्रसर रहने में ही सफलता अनुभव करता है।

मण्डी बीठला

मण्डी बीठला का अन्न संग्रह श्री आचार्य विजयपाल जी योगार्थी जी के द्वारा किया गया, जिसमें श्री उमेद सिंह आर्य ने साथ घूमकर अन्न-संग्रह करवाने में पूर्ण सहयोग दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अय दानी सज्जनों को भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

किलो

100 सर्वश्री नरेन्द्र सु० श्री बलवान सिंह (सुबाना)
100 श्रीभगवान सु० श्री मांगेराम (गिरधरपुर)
100 जाखड़ ट्रेडिंग कम्पनी
100 मनीष ,, ,, (चांद सिंह ढ़ाकला)
100 गर्ग ,, ,, (रमेशचन्द्र गर्ग ढ़ाकला)
100 सत्यनारायण मान
100 सतीश सु० श्री करतार सिंह (सुबाना)
100 सेठ गोपाल (कासनी)
50 नीतिका ट्रेडिंग कम्पनी
50 अमित ट्रेडिंग कम्पनी (आमोली)
50 तेजपाल सु० श्री मीरसिंह (सुबाना)
50 राजेश सु० श्री रिसाल सिंह (खूडन)
50 बिट्टू नम्बरदार (न्यौला)
50 साधुराम (माजरा समसपुर)
50 रवीन्द्र धौल (माजरा समसपुर)
30 बाला जी ट्रेडिंग कम्पनी

कुल अन्न दान 1180 किलो

कुल दान 500 रुपये श्री महीपाल (ढाकला)

ग्राम खूडन

ग्राम खूडन का अन्न संग्रह श्री आचार्य विजयपाल जी योगार्थी के द्वारा किया गया। जिसमें श्री उमेद सिंह आर्य, श्रीधर्मवीर आर्य फौजी, श्रीबसन्त आर्य जी ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०

300 सर्वश्री रामकुमार सु० श्री मनफूल सिंह
300 जयपाल सु० श्री ओमकुमार
200 उमेद सिंह आर्य
200 बबरे पहलवान
100 अमन थानेदार सु० श्री रामअवतार
100 प्रेमदेव आर्य
100 संजय थानेदार सु० श्री सरदारा
100 धर्मवीर आर्य फौजी सु० श्री कलीराम
100 प्रदीप चेयरमैन सु० श्री धर्मसिंह
100 रामचन्द्र सु० श्री खजान सिंह
100 अजीत सिंह सरपंच सु० श्री भौम सिंह
50 जय सिंह सु० श्री रणधीर सिंह
50 अजीत सु० श्री छाजूराम

50 मनवीर सु० श्री नवरत्न
50 दिलबाग सु० श्री मांगेराम
50 महेन्द्र सु० श्री ओमकुमार
50 मनजीत सु० श्री साहब सिंह
50 मनदीप सु० श्री राज सिंह
50 धर्मपाल सिंह सु० श्री विश्वम्भर
50 राकेश वकील सु० श्री दयानन्द
50 कृष्ण सु० श्री मूलचन्द
50 मा० सन्दीप सु० श्री कृष्ण
50 ओमप्रकाश सु० श्री खुशीराम
40 प्रकाश सु० श्री खुशीराम
40 रामकला सु० श्री चन्दगीराम
40 जीतसिंह सु० श्री उमेद सिंह
40 जगवीर सिंह सु० श्री धर्मचन्द
40 राजबीर सु० श्री धर्मचन्द
40 ऋषिराज सु० श्री धर्मचन्द
35 परमजीत सु० श्री बलबीर
35 बलबीर मिस्त्री सु० श्री टेकराम
35 भूपेन्द्र सु० श्री रामपाल
30 राजपाल सु० श्री मुन्शीराम
50 मन्जीत सु० श्री साहब सिंह
20 नवल सिंह सु० श्री धीर सिंह
20 टीकाराम सु० श्री लखेराम
15 राजकुमार सु० श्री खुशीराम
15 मेद सिंह सु० श्री प्रभु
15 पप्पू सु० श्री महा सिंह
15 तकदीर सु० श्री ईश्वर सिंह
10 कपूर सु० श्री राज सिंह
10 कुलदीप सु० श्री जयभगवान
कुल अन्न दान 2820 किलो

नगद दान करने वाले व्यक्ति:-

रु०
2100 सर्वश्री मनजीत सु० श्री होश्यारे नंबदार
1100 मा० सुदर्शन जी आर्य
1100 राज सिंह सु० श्री गूगन
1100 विकास सु० श्री धर्मपाल
1100 मा० प्रदीप सु० श्री धूपसिंह
500 सागर सु० श्री स्व० मनोज कुमार
500 प्रवेश कुमार सु० श्री स्व० बलराम
500 धर्मवीर आर्य फौजी सु० श्री कलीराम
500 सत्यवीर सु० श्री सूरजभान
500 तकदीर सु० श्री दुलीचन्द
500 ओमप्रकाश सु० श्री दरयाव सिंह
500 सनदीप सु० श्री सूबे सिंह
500 लीलराम सु० श्री मांगेराम
500 बलवान सिंह सु० श्री
500 मा० जयवीर सु० श्री रणधीर सिंह
500 मा० बलबीर सिंह० श्री
400 गजेन्द्र सिंह सु० श्री राजेन्द्र सिंह
200 मोनू सु० श्री राजसिंह
101 लोटू सेठ
101 लाला सेठ
100 कुष्ण सु० श्री मीरसिंह
100 राजवीर सु० श्री मीरसिंह
100 संदीप सु० श्री महाशय दयाराम

कुलदान 13602

ग्राम सिलानी

ग्राम सिलानी का अन्न संग्रह श्री आचार्य विजयपाल जी योगार्थी के द्वारा किया गया। जिसमें श्री अरविन्द शास्त्री, श्री दलजीत (छोटे), श्री

वेदपाल, नरेन्द्र आर्य सुपुत्र श्री रामकिशन जी ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०

200 सर्वश्री दलजीत (छोटे) सु० श्री दलपत
200 मा०अजीतसिंह सु० श्री टेकराम
200 महाशय रामकिशन सु० श्री काशीराम
100 बलजीत सु० श्री दलपत
100 राजेश सु० श्री नत्थू
100 अरविन्द शास्त्री सु० श्री तस्वीर सिंह
100 ओ३म् सु० श्री नत्थू
100 देवेन्द्र सु० श्री रामकिशन
100 राजेश सु० श्री भरत
100 वेदपाल सु० श्री कमल सिंह नम्बरदार
100 सतीश सु० श्री सुलतान
100 राज सिंह सु० श्री लहरी
100 राकेश सु० श्री नत्थू
100 तेजपाल सु० श्री नारायण सिंह
100 श्री रामनिवास सु० श्री हरिचन्द
80 पं० मनजीत सु० श्री पं० कृष्ण
60 सूर्यपाल सु० श्री आजाद सिंह
80 रमेश सु० श्री जिले सिंह
50 महेन्द्र सिंह सु० श्री रज्जू
50 होश्यारे सु० श्री इंद्राज
50 राकेश सु० श्री जगदेव
50 धर्मपाल सु० श्री ईश्वर
50 राजेश सु० श्री सूरत सिंह
50 विजय सिंह सु० श्री रघुवीर
50 भगत सिंह सु० श्री मीर सिंह
50 विजयेन्द्र सु० श्री शेर सिंह
50 धर्मवीर सु० श्री कमलसिंह नम्बरदार
50 रामबीर सु० श्री ,, ,,
50 पूर्णसिंह सु० श्री मीहूराम
50 बलजीत सु० श्री सूबे सिंह
50 भोलू सु० श्री मुख्त्यार सिंह
50 कृष्ण सु० श्री किशेरी
50 सुखदर्शन सु० श्री मांगेराम सपंच
50 जीत सिंह सु० श्री सूबे सिंह
50 छोटेलाल सु० श्री मांगेराम
50 राजू सु० श्री टेका पहलवान
50 प्रकाश सु० श्री कमलसिंह नम्बरदार
50 जयभगवान सु० श्री कलीराम
50 श्रीपाल (सोमल) सु० श्री नफेसिंह
50 कपिल सु० श्री बालू
50 ऋषिपाल सु० श्री नफे सिंह
50 सोमवीर सु० श्री रामकिशन
50 बलजीत सु० श्री मेद सिंह
50 राजेन्द्र सु० श्री प्रताप सिंह
50 जयवीर सु० श्री हीरासिंह
50 सत्यपाल सु० श्री हीरा सिंह
50 सोमवीर सु० श्री शुभराम
50 पप्पू सु० श्री दलेल
50 रामचन्द्र सु० श्री सूरतसिंह
50 ओमपाल सु० श्री नफे सिंह
50 कृष्ण सु० श्री सूबेसिंह
50 पप्पू रवीन्द्र सु० श्री सूबेसिंह
50 दिलावरा सु० श्री बेगराज

50 राजेश सु० श्री रघुवीर

कुल अन्न दान 3580 किलो

नगद दान वाले व्यक्ति

रु०

21000 सर्वश्री अनिल (घोड़ा) सु० श्री भूपसिंह
11000 योगेश पहलवान वाईस चेयरमेन
4500 अजीत सिंह, प्रदीप सु० श्री भीमसिंह
4000 मा०आजाद सु० श्री ज्योखीराम
2100 विजयेंद्र ढीलू सु० श्री नत्थू
2100 राज सिंह सु० श्री कलीराम सरपंच
2100 ऋषिपाल प्रधान
2000 समुन्द्र सिंह सु० श्री रामवरूप
2000 रवीन्द्र सु० श्री कपूर सिंह
2000 ओमप्रकाश सु० श्री हरीचन्द
1500 तेज सिंह सु० श्री फतेह सिंह
1100 जयभगवान सु० श्री प्रेम सिंह
1100 रवीन्द्र सु० श्री रघुवीर सिंह
1100 मनोज कुमार सु० श्री ओमप्रकाश
1100 राजवीर पहलवान सु० श्रीकमलसिंह नंबरदार
1100 रामवीर सु० श्री लखीराम
1000 सत्यपाल सु० श्री हीरासिंह
500 चरणसिंह सु० श्री मीहूराम
500 पं० ओमप्रकाश
500 सन्तराम सु० श्री मीर सिंह
500 श्रीभगवान सु० श्री धारू
500 जगवीर सु० श्री हीरासिंह
500 बालकिशन (बालू)
500 सोमपाल सु० श्री रामनिवास
500 रमेश सु० श्री सूबे सिंह
500 धीरेन्द्र सु० श्री चन्द्रभन

कुल दान 65300 रुपये

ग्राम मकड़ौली कलां

ग्राम मकड़ौली कलां का अन्न संग्रह श्री नरेश कुमार शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री सत्यवत जी शास्त्री, श्री महेन्द्र जी आर्य ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०

500 सर्वश्री विजयेन्द्र जी सु० श्री बलवंतसिंहआर्य
250 सु० श्री सत्यव्रत जी शास्त्री ,, ,,
100 जोगेन्द्र सु० श्री दरियाव सिंह
100 जगवीर सु० श्री सूबेसिंह
50 मोनू सु० श्री जगवीर
50 वेदप्रकाश सु० श्री दलीप सिंह
50 रामचन्द्र सु० श्री तेजराम
50 जगवीर सु० श्री सूरजमल
50 हनुवन्त सु० श्री दीपचन्द
50 देवी सिंह सु० श्री बिरखा सिंह
50 श्रीभगवान सु० श्री नफे सिंह
50 सत्यवान पहलवान सु० श्री दलीप सिंह
50 ऋषिपाल शास्त्री सु० श्री मनफूल सिंह
50 पवन शास्त्री (कुश्ती कोच)सु० श्री धर्मपाल
50 धर्मप्रकाश सु० श्री कर्ण सिंह
40 हितेन्द्र सु० श्री सत्यवीर
40 कुलदीप सु० श्री बलवन्त सिंह
40 धर्मवीर सु० श्री जिले सिंह
40 मनीष शास्त्री सु० श्री सूरजमल
25 जसवीर सु० श्री सुलतान

20 किलो अन्न देने वाले व्यक्ति

सर्वश्री अशोक सु० श्री सत्यपाल, अमन सु० श्री सूरजभान, महेन्द्र सु० श्री दलीप सिंह, देवेन्द्र सु० श्री महेन्द्र सिंह, सत्यवीर सु० श्री दलीप सिंह, अजमेर सु० श्री रामफल, देवपाल पूर्व सरपंच, बलजीत सु० श्री भीम, वासुदेव सु० श्री यशवीर, चन्द्रपाल सु० श्री जयकरण, जगत सिंह सु० श्री सूबे सिंह, जगमेन्द्र सु० श्री सुलतान सिंह, रामकुमार सु० श्री नफे सिंह।

10 किलो अन्न देने वाले व्यक्ति

सर्वश्री शमशेर सु० श्री मेहर सिंह, विजयेन्द्र सु० श्री श्रीकृष्ण, शमशेर सु० श्री सरूप सिंह, सूरजमल सु० श्री हरिसिंह, डॉ० जयपाल सु० श्री धर्म सिंह, चन्द्रपाल सु० श्री शीशराम।

कुल अन्न दान 2005 किलोग्राम

नगद दान देने वाले व्यक्ति

रु०

1100 श्रीनिवास आर्य सु० श्री रामपत
500 संजय आर्य
500 मा० जसवन्त सु० श्री करतार सिंह
300 रामचन्द्र आर्य
250 महेन्द्र सिंह आर्य
250 श्री धर्मवीर जी
कुल नगद दान 2900 रु०

ग्राम भापड़ौदा

ग्राम भापड़ौदा का अन्न संग्रह श्री महावीर जी शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री प्रवेन्द्र शास्त्री जी, डॉ० सुनील कुमार जी ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०

100 सर्वश्री डॉ० सुनील कुमार सु० श्री भीष्मप्रताप शास्त्री
100 सुभाष सु० श्री बलबीर सिंह
50 उमेद सु० श्री नेकीराम
50 रिसाल सु० श्री अमर सिंह
50 जयदेव शास्त्री सु० श्री मीर सिंह
50 पवन सु० श्री मीर सिंह
50 बिजेन्द्रसु० श्री जग सिंह
50 दीपक सु० श्री जयप्रकाश
50 विजय सु० श्री रामवीर
50 देवेन्द्र सु० श्री श्रीओम
50 मा० बलबीर सु० श्री केहर सिंह
50 धर्म सिंह
50 वैद्य ज्ञानदेव जी
50 बिजेन्द्र (काका) सु० श्री राममेहर
50 ईश्वर सु० श्री टेकचन्द
50 राजपाल सु० श्री कपूर सिंह
50 चौ० मांगेराम पूर्व सरपंच
50 रवीन्द्र सु० श्री राममेहर
50 रोहताश सु० श्री ओमप्रकाश
50 सत्यपाल सु० श्री बलबीर
50 सोमवीर
50 रामफल सु० श्री सत्यवीर
50 विजयपाल सु० श्री धर्म सिंह
50 राजपाल सु० श्री शीशपाल
45 राजेश सु० श्री रत्न सिंह

45 जितेन्द्र पूर्व सरपंच सु० श्री दयानन्द
45 प्रमोद (काला)सु० श्री राजसिंह
40 कृष्ण सु० श्री लालचन
40 अजीत सु० श्री प्यारे लाल
40 मन्जीत सु० श्री जगदीश
40 सुरेश सु० श्री भगत सिंह
35 जोगेन्द्र सु० श्री रामेहर
30 रामकिशन
30 कृष्ण (बबलू) सु० श्री सूरता
30 सत्यवीर सु० श्री रणसिंह
30 बिल्लू सु० श्री दिलबाग
30 योगेन्द्र सु० श्री सत्यवीर
30 हंसराज सु० श्री हरिश्चन्द्र
30 दलवीर सु० श्री भूप सिंह
30 मन्नू सु० श्री रामेहर
30 राजपाल सु० श्री दरियाव सिंह
25 कुलदीप सु० श्री दलीप सिंह
20 भंवर सिंह तैय्या
20 श्रीनिवास सु० श्री महा सिंह
20 मौसम सु० श्री रामचन्द्र
20 अजय सु० श्री सत्प्रकाश
20 जयप्रकाश सु० श्री किशन स्वरूप
20 सोनू सु० श्री महीपाल

15 किलो अन्न देने वाले व्यक्ति

धर्मेन्द्र सु० श्री राममेहर, जस्सू सु० श्री शमशेर, मा० रणजीत सिंह, विक्रम सु० श्री ओमप्रकाश, धर्मेन्द्र सु० श्री सूरजभान।

10 किलो दान देने वाले व्यक्ति

विनोद सु० श्री जगत सिंह, आजाद सु० श्री सुखलाल, सतीश सु० श्री वेदप्रकाश, संजय सु० श्री दिलबाग, सिलू सु० श्री गूगन, सोमवीर सु० श्री वेदप्रकाश, राजकिशन सु० श्री रामा, बिल्ला सु० श्री उमेद सिंह, राजबीर सिंह, ओमप्रकाश सु० श्री प्रताप सिंह,ओमन सु० श्री रामेहर, सन्दीप सु० श्री रणवीर, कपूर सु० श्री जयचन्द्र, नरेन्द्र सु० श्री देवराज, प्रदीप सु० श्री भल्लू, काला सु० श्री जसवीर, सोमवीर सु० श्री रामेहर, शमशेर सु० श्री जयचन्द्र, सुरेन्द्र सु० श्री जगवीर सिंह, सुखवीर सु० श्री धर्मवीर, आनन्द सु० श्री रामकुमार,
बिजेन्द्र सु० श्री धर्म सिंह, श्रीभगवान् सु० श्री धर्मसिंह, सचिन सु० श्री रामफल।
कल अन्न दान 2355 किलो

नगद दान करने वाले व्यक्ति:-

रु०
1100 सर्वश्री मोहित सु० श्री जगवीर
1100 मा० ईश्वर सिंह सु० श्री किशनचन्द्र
1100 नवीन सु० श्री शमशेर सिंह
1100 तेजपाल सु० श्री चन्दराम
1100 मा० नरेन्द्रसु० श्री होश्यार सिंह
1100 बलवान सु० श्री टेकराम
1100 डा० सुरेश कुमार
1100 भानु
500 हरेन्द्र सु० श्री मांगेराम
500 प्रमोद (काला) सु० श्री राज सिंह
500 दीपेन्द्र सु० श्री कृष्ण
500 विक्रम सु० श्री जयपाल
500 जोगेन्द्र सु० श्री ठेकेदार रणधीर सिंह
500 वीरेन्द्र सु० श्री बनी सिंह
500 अजीत सु० श्री प्यारेलाल

500 भानु सिंह
500 सत्यवीर सु० श्री धर्म सिंह
500 सोनू सु० श्री शमशेर
500 मा० रणजीत सिंह
500 शमशेर सु० श्री चरण सिंह
500 सोमवीर सु० श्री केहर सिंह
500 डा० सन्दीप सु० श्री हवा सिंह
500 रणवीर सु० श्री श्रीराम
500 सुरेन्द्र सु० श्री डा० जगजीत (नासा **U.S.A.**)
500 विश्व जीत सु० श्री जितेन्द्र
500 रमेश सु० श्री बलबीर
500 चौ० रघुवीर सिंह राठी
500 बीना
250 अंकुर सु० श्री बलवान
250 धर्मा सु० श्री सुरेश
200 राजेन्द्र सु० श्री रामचन्द्र
200 सूरजभान सु० श्री रमेश

100 रु० देने वालों के नाम

शिलू सु० श्री नरेश, फूलकुमार सु० श्री चन्द्रभान, विनोद सु० श्री जगत सिंह, नान्हा हलवाई, सत्यवीर सु० श्री रणसिंह, राजवीर सु० श्री चंद्रभान।

कुल नगद दान 20301

ग्राम बालन्द

ग्राम बान्लद का अन्न संग्रह श्री महावीर जी शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री डा० रामवीर शास्त्री, बहन राजबाला शास्त्री, श्रीदलजीत आर्य, श्री कृष्ण आर्य जी ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०
100 सर्वश्री राजबाला शास्त्री सुपुत्री नंदराम आर्य
100 रामवीर शास्त्री सु० श्री जयप्रकाश
100 कृष्ण आर्य सु० श्री धनपत
100 सोमदेव शास्त्री सु० श्री सुखलाल
100 भगवान सिंह वेदपाल सु० श्री महा. मायाराम
100 अब्बन सु० श्री रामशरण
50 तस्वीर सु० श्री सुखलाल
50 तेजवीर सु० श्री बब्लू
50 सत्यवीर सु० श्री फते सिंह
50 धर्मवीर सु० श्री हरिया
50 बलवान सु० श्री रतन सिंह
50 हरिया सु० श्री लहजेराम
50 रघुवीर सु० श्री सोहन
50 नवल सिंह सु० श्री मायाराम
50 अशोक पहलवान सु० श्री धर्मपाल
50 कर्ण सिंह सु० श्री भरत सिंह
50 कपूर सु० श्री गणपत
50 राजेश पहलवान सु० श्री दीदारी
50 कृष्ण सु० श्री महेन्द्र
50 धर्मवीर सु० श्री खेमराम
40 रघुवीर सु० श्री रत्न सिंह
40 जगत आर्य सु० श्री जोगीराम
40 सत्यव्रत सु० श्री मुन्शीराम
40 रामफल सु० श्री भगवाना
40 दयानन्द सु० श्री गिरधारी
40 अजाद सु० श्री रामफल
35 ईश्वर सु० श्री हिम्मत
35 रामचन्द्र सु० श्री अमर सिंह

30 कुलदीप सु० श्री जागेराम
30 महावीर सु० श्री प्यारे लाल
30 जोधा सु० श्री छाजूराम
30 दीपक सु० श्री रामफल फौजी
25 हवा सिंह सु० श्री मातूराम
25 डा० राजेश सु० श्री धर्मपाल
25 सुरेश सु० श्री गणपत
25 वीरेन्द्र सु० श्री कपूर सिंह

20 किलो देने वाले व्यक्ति :-

सर्वश्री सन्दीप रणवीर, संदीप सु० श्री सोमवीर, चंद्रभान सु० श्री प्रभाती, महेश सु० श्री जगवीर, सुखवीर पूर्व सरपंच, कुलदीप सु० श्री प्यारेलाल, महावीर सु० श्री रामकुमार, विनोद रंगा सु० श्री ओमप्रकाश, धनपत सु० श्री लखीराम, मुनीराम सु० श्री रघुवीर, जयपाल आर्य सु० श्री हरिकिशन, जय सिंह सु० श्री केदारे, सोमवीर सु० श्रीदीवान, लीलू सु० श्री दिदारी, डा० रामेश्वर, बन्टी सु० श्री राजसिंह, जयदेव शास्त्री सु० श्री भीमसिंह, दिलबाग सु० श्री रामकिशन, महेन्द्र सु० श्री अत्तर सिंह।

10 किलो गेहूं देने वालों के नाम-

सर्वश्री जोगेद्र सु० श्री बलवान, जयभगवान सु० श्री अमर सिंह, धर्मपाल सु० श्री सुधन सिंह, प्रकाश सु० श्री महासिंह, जिले सु० श्री मशानिया।

कुल दान 2260 किलो

नगद दान करने वाले व्यक्ति :-

रु०
2100 सर्वश्री महीपाल शास्त्री
1100 संजय आर्य सु० श्री महाशय भगवानसिंह
500 डा० संजीव (डीघल)
500 कंवल सिंह सु० श्री भरत सिंह
500 राज सु० श्री दरिया
200 नवाब आर्य
200 सूबेदार सत्यवीर सु० श्री हनुमन्त
200 मा० संदीप सु० श्री जयभगवान
200 ईश्वर सु० श्री मेहर सिंह
200 जगवीर पहलवान
200 दीपक पहलवान
200 अशोक सु० श्री जयचन्द आर्य
200 भगतसिंह सु० श्री बलवीर सिंह

100 रु० दान देने वाले व्यक्ति:-

सर्वश्री राजेन्द्र सु० श्री टेकराम, जगवीर सु० श्री महासिंह, रणवीर शास्त्री, देवेन्द्र पहलवान, फिरोज सु० श्री राजसिंह, आनन्द कुमार सु० श्री महेन्द्र, रणजीत सु० श्री शिवलाल, दलीप सु० श्री शिवलाल, प्रवीण सु० श्री नरेन्द्र, हरभगवान सु० श्री लहरी, जयदेव सु० श्री सेहतराम, हरभगवान सु० श्री भरत सिंह, योगेंद्र आर्य सु० श्री बलबीर, रोहताश सु० श्री हिम्मत रघुवीर सु० श्री शेर सिंह, जगवीर सु० श्री रिसाले, रामचद्र सु० श्री बलवीर। 50 रु० अजीत सु० श्री कपूर सिंह, 50 रु० गंगा।

कुल नगद दान 7900 रु०

ग्राम अकेहड़ी मदनपुर

ग्राम अकेहड़ी मदनपुर का अन्न संग्रह श्री महावीर जी शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री मदनलाल शास्त्री, श्री पं० रामनिवास व्यापारी जी ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०
200 सर्वश्री ऋषि कुमार सु० श्री रत्न सिंह

200 पं० रामनिवास सु० श्री लक्ष्मीनारायण
200 गोपीराम सु० श्री घीसाराम
130 रामभगत सु० श्री भागमल (अमादल शाहपुर)
100 हरिओम सु० श्री छोटेलाल
100 ओमकुमार सु० श्री चन्द्रभान
100 यशपाल व वेदपाल सु० श्री डा० विजय कुमार (मातनहेल)
100 ओमप्रकाश शास्त्री व राजवीर शास्त्री (बिरड़)
100 इन्द्रजीत ठेकेदार सु० श्री रत्नसिंह
100 सत्यवीर सिंह सु० श्री दुलीचन्द
100 रमेश सु० श्री माल्हाराम
100 साधुराम सु० श्री श्रीचन्द
100 करतारसिंह पूर्व सरपंचसु० श्री जयलाल
100 रण सिंह सु० श्री जगराम
80 मा० भीम सिंह (साल्हावास)
60 सुरेन्द्र नम्बरदार सु० श्री मांगेराम
50 सुलेख सु० श्री रणधीर
50 वेदप्रकाश संस्कृत अध्यापक
50 पं० बबलू
50 राजेन्द्र सु० श्री रिसाल सिंह सौनी
50 रामप्रकाश सु० श्री छोटेलाल (अमादल शाहपुर
50 चन्दन सु० श्री रामकुमार पूर्व सरपंच (अमादल शाहपुर)
50 लाल सिंह सु० श्री श्योचन्द (अमादल शाहपुर)
50 दिनेश सु० श्री बनवारीलाल (अमादल शाहपुर)
50 अमरदीप सु० श्री ,, ,, ,,
50 मास्टर भीम सिंह सु० श्री राजसिंह (साल्हावास)
50 मा० रणवीर सिंह (लडायन)
50 श्रीमती बिमलादेवी धर्मपत्नी मा० इन्द्र सिंह (बिरड़)
50 अशोक सु० श्री महताब
50 महन्त सूरजभान दास
50 बल्ली सु० श्री भूपसिंह
50 जगदीप सु० श्री कृष्ण
50 रामफल सु० श्री चन्दा

कुल अन्न दान 2710 किलो

नगद दान देने वाले व्यक्ति

रु०
2100 जितेन्द्र सु० श्री सन्तराम पूर्व सरपंच
500 भीम सिंह (साल्हावास)
500 राजवीर सु० श्री रत्न सिंह
कुल दान 3100 रु०

ग्राम माजरा दूबलधन

ग्राम माजरा दूबलधन का अन्न संग्रह श्री नरेश कुमार शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री विकास जी आर्य, श्री राजसिंह जी नम्बरदार, श्री धर्मपाल जी, श्री हरिश्चन्द्र जी, श्री जीतराम जी आर्य ने साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०
250 सर्वश्री धर्मपाल सु० श्री रणधीर

200 जीतराम सु० श्री नान्हटाराम
100 राजसिंह नम्बरदार सु० श्री रामसिंह नंबरदार
100 प्रवेन्द (बब्लाा) सु० श्री बलवीर सिंह
100 विकास आर्य सु० श्री वेदपाल
100 धर्मसिंह सु० श्री जाति राम
100 महाशय भगवानसिंह आर्य
100 रामअवतार सु० श्री मा० तेज सिंह
100 हरिश्चन्द्र सु० श्री रत्नसिंह
100 ईश्वर सिंह सु० श्री नान्हटाराम
100 उदय सिंह सु० श्री नान्हटाराम
100 राज सिंह सु० श्री शिवलाल
100 सत्यवीर सु० श्री लगतराम

कुल अन्न दान 1550 किलो

नगद दान करने वाले व्यक्ति:-

रु०
2100 दयानन्द सु० श्री मांगेराम
2100 नरेन्द्र सु० श्री पालह सिंह
2100 रणबीर सु० श्री नरसिंह
2000 धर्मपाल सु० श्री सुभानन्द
2000 धर्मवीर सु० श्री रघुवीर
1100 बलवान सिंह सु० श्री राजेन्द्र
1100 वासुदेव सु० श्री ताराचद
500 होश्यार सिंह सु० श्री रत्न सिंह
500 सोमवीर जी आर्य
500 सत्यवीर सिंह सु० श्री महा सिंह
500 जसवीर सु० श्री चन्दराम
500 सुखवीर सु० श्री श्रीराम
200 रामचद्र सु० श्री नरसिंह
200 सत्यवीर सिंह सु० श्री बख्तावर
100 सत्येन्द्र सु० श्री घासीराम

कुल नगद दान 15500 रु०

ग्राम मलिकपुर

ग्राम मलिकपुर का अन्न संग्रह श्री नरेश कुमार शास्त्री के द्वारा किया गया। जिसमें श्री सतीश जी आर्य सु० श्री सत्यव्रत जी पूर्व एस०डी० ओ०, ने साथ-साथ घूमकर अन्न संग्रह कराने में पूर्ण सहयोग दिया तथा अपना भी अन्न दिया। अत: आप गुरुकुल परिवार की ओर से विशेष धन्यवाद के पात्र हैं एवं अन्य दानी सज्जनों का भी धन्यवाद।

अन्न दान करने वाले व्यक्ति

कि०
200 सर्वश्री रामकुमार आर्य सु० श्री रणजीत
200 धर्मपाल सु० श्री सुलतान सिंह
150 कुलदीप सु० श्री ताराचन्द
100 सर्वर सिंह सु० श्री रघुवीर
100 सोमवीर सु० श्री होशियार सिंह
100 सत्यवीर सु० श्री उदय सिंह
100 प्रताप सिंह सु० श्रीमती छन्नो देवी
50 श्री जय सिंह सु० श्री अमर सिंह
50 विजय सिंह सु० श्री बलवीर
50 पाले राम सु० श्री दिवानसिंह
50 बलजीत सिंह सु० श्री दिवान सिंह
50 पवन कुमार सु० श्री होशियार सिंह
50 प्रताप सिंह सु० श्री सुखलाल
50 अजीत सिंह सु० श्री फतेह सिंह
50 मा० गजे सिंह सु० श्री दीपचन्द
50 संजय सु० श्री कप्तान सिंह
50 शमशेर सु० श्री कर्मवीर

50 जगफूल सु० श्री शेर सिंह

कुल अन्न दान 1500 किलो

नगद दान करने वाले व्यक्ति :-

रु०

4000 सर्वश्री महताब सिंह सु० श्री मुसद्दीलाल
2100 सत्यव्रत जी आर्य पूर्व एस०डी०ओ०
2100 अजय सु० श्री आजाद सिंह
1100 प्रदीप सु० श्री सत्यपाल सिंह
1100 राजवीर सिंह सु० श्री रिसाल सिंह
1100 शिशनपाल सु० श्री होशियार सिंह
1100 विकास सु० श्री धर्मवीर
1000 नरेश कुमार सु० श्री ओमप्रकाश
1000 धारा सिंह सु० श्री मुसद्दीलाल
1000 जगवीर सिंह सु० श्री फूलचन्द
500 सुनील सु० श्री महा सिंह
500 सोमवीर सु० श्री कमल सिंह
500 सुखदर्शन सु० श्री नफे सिंह
500 ब्रह्मानन्द सु० श्री नेकीराम
500 मा० सुरेन्द्र जी
500 सूबेदार जयवीर सिंह
500 भरत सिंह सु० श्री अमर सिंह
500 हिम्मत सिंह सु० श्री मंगलीराम
500 देवेन्द्र सु० श्री मा० राजेन्द्र
500 बनीसिंह सु० श्री सुखलाल
500 रामचन्द्र सु० श्री सरदार सिंह
500 सत्यवीर सु० श्री रण सिंह
500 प्रवेन्द्र सु० श्री मितलाल
500 मुकेश सु० श्री रामचन्द्र
500 पंकज सु० श्री रोहताश सिंह
500 स्व० वेदपाल सु० श्री मान सिंह
500 सूरजप्रकाश सु० श्री रणसिंह
500 मा० महीपाल सु० श्री हजारीलाल
500 उमेद सिंह सु० श्री कटार सिंह
500 रामेहर सु० श्री बिहारीलाल
500 सतीश सु० श्री ओमप्रकाश
500 जगवीर सु० श्री दरियाव सिंह
500 चन्दन सिंह सु० श्री खुशीराम
500 सुधीर सु० श्री अभयराम
300 विजयेन्द्र सु० श्री छाजूराम
300 महासिंह सु० श्री राय सिंह
300 विनोद सु० श्री हुक्कम सिंह
200 जयमल सु० श्री कटार सिंह
200 राजेन्द्र सिंह
200 उमेश सु० श्री विनय सिंह
200 विजयेन्द्र सु० श्री आशीष
200 सुन्दर सु० श्री जिले सिंह
200 मोनू सु० श्री प्रकाश
200 संजीव सु० श्री मितलाल
200 दिनेश सु० श्री कृष्णसिंह
200 मन्तलाल सु० श्री मानसिंह
200 शिव कुमार सु० श्री धीरसिंह
200 कर्ण सिंह सु० श्री जुगलाल
200 नान्हा सु० श्री कटार सिंह
200 रणवीर सिंह सु० श्री हवा सिंह
200 रवीन्द्र सु० श्री अनूप सिंह
200 ओमप्रकाश सु० श्री सूरत सिंह
200 फूलकुमार सु० श्री चन्द्र सिंह
200 बलवान सिंह सु० श्री राजवीर
200 पवन कुमार सु० श्री रामनिवास
200 महेश कुमार

200 डॉ० प्रवीण आर्य
200 हरीश कुमार सु० श्री भूपसिंह
200 राजवीर सु० श्री दरियाव सिंह
200 रामवीर सु० श्री अमित सिंह

100 रु० नकद देने वाले सज्जन-

सर्वश्री सुरेन्द्र सु० श्री रामफल, महावीर सु० श्री उदय सिंह, तेजबीर सु० श्री जय सिंह, राजसिंह सु० श्री फूल सिंह, जगवीर मिस्त्री, रोहित सु० श्री सुरेश, ओमप्रकाश आर्य, मायाचन्द आर्य, प्रदीप सु० श्री दयाकिशन, मंजीत सु० श्री दयाकिशन, हिमांशु सु० श्री राजवीर, फतेह सिंह आर्य, पूर्व सरपंच जयप्रकाश सु० श्री हवा सिंह, राजकुमार सु० श्री श्योनारायण, समय सिंह सु० श्री जुगतीराम कृष्ण कमार सु० श्री मौजीराम, जगदीप सु० श्री रामगोपाल।

50 रु० देने वाले सज्जन

51 रु० रणबीरसिंह, सुखदर्शन सु० श्री नफे सिंह, रामप्रताप जी, भोलू सु० श्री जगदीश, सुरेन्द्र सु० श्री नत्थुराम, नरेश बैनीवाल।

कुल नगद दान 35102 रु०

पुराने पत्रों के संदर्भ में

आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द जी) आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं दिन-रात जहां क्रियात्मक रूप से प्रयत्नशील रहते थे, वहीं अपने योग्य शिष्यों को भी देश-विदेश में प्रचारार्थ भेजने की योजना को क्रियान्वित करते रहते थे। इसी कड़ी में जब आचार्य जी सन् १९६६ में अण्डमान निकोबार में प्रचारार्थ जाकर वहां वैदिक धर्म के प्रति जनता में आकर्षण उत्पन्न कर दिया था तो यह आकर्षण बना रहे, इसी निमित्त उन्होंने अपने शिष्य ब्रह्मचारी सत्यव्रत वसु को अण्डमान में आर्यसमाज के प्रचारार्थ भेजा था। वहा जो कुछ वसु जी ने प्रचार और यज्ञ आदि के माध्यम से वैदिक धर्म की पताका फहाई वह उन्हीं के शब्दों में पढिये-

ब्रह्मचारी वसु द्वारा
भारत जनरल स्टोर
एवरडीन बाजार,
पोर्ट ब्लेयर
अण्डमान द्वीप १६.१.१९६९

श्रद्धेय गुरुवर
सादर नमस्ते
चरण स्पर्श

बहुत दिनों से आपका कोई कृपापत्र न मिलने से आपकी सेवा में यह पत्र लिख रहा हूं, क्योंकि आपका कृपा पत्र मिलता रहे तो मुझे बड़ा सम्बल रहता है। वैसे आपको कार्य बहुत रहता है इसका मुझे ध्यान है, पर महीने में एक पत्र तो अवश्य मिलना चाहिये। आपके आशीर्वाद से मैं खूब सफलता पूर्वक वैदिक विचारों और महर्षि के उद्गारों का यहां प्रचार कर रहा हूं। आपके तपोबल से अब यहां मेरी आवाज की प्रबलता के कारण निहचल सिंह आदि मेरी राह के सब कांटे मुड़ गये हैं, अत: उनकी पेश नहीं जाती, क्योंकि वह जानते हैं, हिन्दू जनता में एक ज्वार आ रहा है और इन लहरों को हमने रोकने की कोशिश की तो हम स्वयं बह जायेंगे अत: वह नमस्ते करने लगे

हैं। मैं गांव गांव में जाकर प्रचार कर सकूं ऐसी यहां के बाबू भगवान् सिंह जी, श्री मेहता जी श्री, श्याम नारायण दूआ जी जो सच्चे देशहितैषी हैं, मेरे कार्य से खूब प्रसन्न हैं। यहां के आफिसर वर्ग भी अच्छा सहयोग दे रहे हैं। e.e.जो सरदार जी हैं अभी पकड़ में नहीं आये हैं।

यहां कार्बिन्स कोव में संक्रांति को विशाल यज्ञ करके पहली बार यहां की जनता ने संक्रान्ति पर्व की महत्ता को जाना, वह तो आपने देखा है समद्र के किनारे लोगों की शराब पार्टी मनाने की जगह है परन्तु इस दिन विशाल यज्ञ से पवित्र होकर वहां का वायुमण्डल वेद की ऋचाओं से गूंज रहा था, जहां मुर्गियों के पंख उड़ा करते, वहां ओ३म् ध्वज लहरा रहे थे। लगभग २० गांवों के लोग ट्रकों, बसों, गाड़ियों में बैठकर ओ३म् ध्वज लहराते, वैदिक धर्म के नारे लगाते यहां पर पहुंच रहे थे।

दूसरी ओर एवरडीम बस्ती तथा बाजार के लोगों के लिये स्पेशल बस सर्विस का आपके युवक शिष्यों ने सरकार द्वारा प्रबन्ध करा दिया था। यहां के इतिहास में एक नया मोड़ आ रहा है, परन्तु यह धारा टूटनी नहीं चाहिये। अग्नि आपकी दया से मैंने प्रज्वलित कर दी है। कई द्वीपों में जाकर वेद के सन्देश को गुंजा दिया है। इस द्वीप समूह को मुसलमानों से उतना खतरा नहीं, जितना ईसाइयों से है। ईसाई पूरे छल-बल से लगे हुए हैं, क्योंकि यह द्वीप समूह सोने की खानें हैं, जैसा कि आप जानते हैं, भौगोलिक महत्त्व भी इनका कम नहीं है। मैं कार्य की अधिकता तथा खुराक (घी तो बिल्कुल नहीं मिलता) की कमी के कारण एक बार आपके चरणों में लौटकर पूरी शक्ति से यहां सपाटा मारूंगा। अत: गुरुकुल के उत्सव पर मैं पहुंच जाऊंगा। २२ या २३ को निकोबार चला जाऊंगा और फरवरी के दूसरे सप्ताह तक कलकत्ता पहुंच जाऊंगा।

यहां आयुर्वेदिक एक भी औषध नहीं है पूरे द्वीप समूह में, यदि कोई कम लोभी वैद्य यहां बैठ जाये और अपने गुरुकुल की एजेसी ले ले तो प्रचार मैंने खूब कर दिया है। कई तो मेरे छोटे मोटे टोटकों और भाई बलदेव जी व्याकरणाचार्य के द्वारा प्रदत्त औषधियों से ठीक भी हो चुके हैं। जो आये उसकी दुकान मैं जमवा दूंगा पर बोधेन्द्र देव जैसा लोभी न हो, अन्यथा आर्यों के प्रति अश्रद्धा ही करेगा, अगर कोई अच्छा हो तो तलाश करें।

शेष आपकी दया है। गायत्री मंत्र यहीं छपवा कर हजारों की संख्या में बटवा दिये हैं अपकी 'पापों की जड़ शराब' पुस्तक ने यहां बड़ा कार्य किया है। मेरा यह एक एक मिनट आपके आदेश पालन में बीता है, इसकी साक्षी

मेरा कार्य दे रहा है। बस इसी प्रकार मुझ पर आपका हाथ बना रहे, यही कामना है, बाकी कठिनाइयां मैं स्वयं साफ कर लूंगा।

समस्त कुलवासी बन्धुओं को यथायोग्य नमस्ते।

आपका

फक्कड़ बेटा ब्रह्मचारी वसु

पोर्ट ब्लेयर

अण्डमान द्वीप समूह

३.२.१९६९

श्रद्धेय गुरुवर्य! सादर नमस्ते चरण वन्दना।

मैं अभी तक मुख्य-मुख्य द्वीपों में जाकर महर्षि का संदेश गुंजा रहा हूं....आपके तप: पुञ्ज के प्रताप तथा शुभाशीर्वाद से मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ है। यहां के लोगों पर आर्यसमाज का जो असर हुवा यह तो आकर ही देखें तो बात बने। यहां के लोग आर्यसमाज को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे हैं। वैसे प्रचार मैंने मन्दिरों में बैठकर किया है गांव-गांव में घूमा हूं। निकोबार तथा ननकवरी भी गया, वहां के हालत देख कर तो कलेजा मुंह को आता है। वहां जो हो रहा है, वह आकर ही बताऊंगा, उसका इलाज न सोचा तो वह दिन दूर नहीं कि यहां भी...। शेष मिलने पर उत्सव पर पहुंच रहा हूं। आपका

फक्कड़ बेटा

ब्रह्मचारी वसु

रक्षा बन्धन से चलेगा भाषा संस्कृति रक्षा महाभियान-स्वामी प्रणवानन्द

श्रीमत् दयानन्द आर्ष वैदिक गुरुकुल न्यास (परिषद्) के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने रक्षा बन्धन पर्व को भारतीय भाषा संस्कृति रक्षा संकल्प दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया है। गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली में प्रमुख आचार्यगण, विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को संबोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आप लोग एक एक भारतीय नागरिक से संपर्क कर उन्हें तीन संकल्प दिलवाएं। **पहला** भारत का समस्त कार्य भारत की भाषाओं में हो। **दूसरा** सांस्कृतिक व आधार भाषा संस्कृत प्रथम कक्षा से कक्षा बारहवीं तक अनिवार्य रूप से पढाई जाए। **तीसरा** मानव निर्माण की स्वदेशी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली धीरे धीरे पूरे देश में लागू की जाये क्योंकि कठोर कानूनों के रहते, भारी पुलिस के रहते अनन्त शिक्षा संस्थानों के होते हुए भी अपराध, हत्यायें और आत्महत्यायें बढती ही जा रही हैं क्योंकि मानव का निर्माण नहीं हो रहा है। मानव का निर्माण चरित्रवान् गुरुओं के सानिध्य में गुरुकुलों में ही हो सकता है। पूरे देश में इसकी जागृति करने के लिये गुरुकुल स्नातकों व देशभक्तों की क्षेत्रवार नियुक्तियां की जा रही हैं। २२ अगस्त रविवार को रक्षाबंधन के अवसर पर देश के सभी गुरुकुलों व अन्य शिक्षा संस्थाओं में यह संकल्प दिलाकर अभियान के पहले चरण का आरंभ किया जायेगा। फिर तीन मास तैयारी करके देश के प्रत्येक जिले में प्रदर्शन कर ज्ञापन दिए जायेंगे। प्रधानमंत्री राष्ट्रपति से मिला जायेगा। जब तक तीनों बातें लागू नहीं होंगी तब तक संघर्ष बढता जायेगा। **महावीर धीर** अभियान समन्वयक

९४६६५६५१६२

शोक सन्देश (१)

शाहपुर (मुजफ्फरनगर) वासी श्री वेदपाल जी वर्मा शास्त्री का ८ जुलाई २०२१ को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया, वे ८६वर्ष के थे। ये आचार्य भगवन्देव जी के श्रद्धालु भक्तों में से थे। जब आचार्य भगवान्देव जी(स्वामी ओमानन्द जी) सन् १९५७ के हिन्दी सत्याग्रह में कार्य कर रहे थे, उस समय पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों ने आचार्य जी को गिरफ्तार करने के लिये घोषणा कर दी थी कि इस व्यक्ति को जीवित या मृत पकड़वाने वाले को पचास हजार रुपये दिये जायेंगे। ऐसी अवस्था में आचार्य जी श्री वेदपाल शास्त्री के पास रसलपुर जाटान (मुजफ्फरनगर) में रहे। चौ० आशाराम और डा० कर्णसिंह के निवास पर रहते हुए वेदपाल जी ने आचार्य जी की सेवा सुश्रूषा की तथा वहीं गुप्त रूप से पत्र व्यवहार करते हुए सत्याग्रह का संचालन करते रहे।

श्री वेदपाल जी इन्टर कालेज में पढ़ाते हुए भी आर्यसमाज का प्रचार करते रहे। निरन्तर स्वाध्याय करते हुए **'वेद में कहां क्या'** नामक पुस्तक लिखी। मूलत: ये किरठल के निवासी थे। गुरुकुल किरठल में भी ये सेवा देते रहते थे।

ऐसे आर्यसमाज के सवेक के निधन से पारिवारिक जनों को जो पीड़ा हुई है उस शोक को कम करने के लिये तथा साथ ही उनके आत्मा की सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई

-सुधारक के संवाददता द्वारा

(२)

गुरुकुल झज्जर के प्रति दृढ आस्था रखने वाले चिमनी (झज्जर) वासी महाशय कूड़ेराम आर्य का ८८ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उन्होंने अपने दोनों पुत्र राजेन्द्र कुमार और योगेन्द्र कुमार को गुरुकुल झज्जर में पढ़ाया। पुत्री कुसुम को कन्या गुरुकुल नरेला में पढ़ाया। वे अन्तिम समय तक पूर्ण स्वस्थ थे।

उनका शांतियज्ञ १ अगस्त को आचार्य विजयपाल जी योगार्थी ने कराया। यज्ञ में आत्मा की नित्यता और शरीर की अनित्यता का उपदेश देकर परिवार के लोगों को धैर्य धारण करने तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गई।

अनमोल वचन

मृत्यु उपरांत लोग आपके सद्कर्मों व बुरे कर्मों को ही याद रखेंगे न कि आपकी धन-दौलत को, इसलिये मनुष्य को चाहिये कि वह अच्छे कर्म ही करें ताकि लोग उन्हें इज्जत से याद करें व आपका अगला जन्म भी सुधर सके।

ब्राह्मणों की मान्यता से जातिघात

लेखक-आनन्देव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता (संस्कृत) दिलली सरकार

कश्मीर समस्या-

मोहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण से पूर्व अर्थात् आठवीं शताब्दी से पूर्व वायव्य कोण से भारत पर आक्रमण होते रहते थे। चौदहवीं शताब्दी तक वाहीक, बौद्ध तथा हिन्दू राजाओं का कश्मीर में राज चला (राजतरंगिणी)।

१५८७ में अकबर ने कश्मीर पर अधिकार कर लिया था। १७५० ई० में अहमद शाह अब्दाली ने कश्मीर पर हमला किया और १८९१ तक कश्मीर में अलग-अलग पठानों का राज रहा।

१३वीं शताब्दी में कश्मीर पर तातारों ने हमला किया, तब स्वात के शाहमीर और तिब्बत के रामचन्द्र शाह को सहायता के लिये बुलाया गया। रामचन्द्र शाह ने जीत के बाद सेनापति को मार उसकी कुटारानी से विवाह किया। भिन्न जातीय होने के कारण हिन्दुओं ने उसे नहीं अपनाया अत: वह मुसलमान बन गया। तब उसने अपना नाम सदरूद्दीन रक्खा। इसके मरने के बाद स्वात के शाह ने कश्मीर पर हमला किया। वही कश्मीर का पहला सुल्तान बना। १३९४ में सिकन्दर गद्दी पर बैठा, उसने हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किये। वहां के यज्ञोपवीत धारी पंडितों को उसने कितनी तादाद में मारा इसका उल्लेख मि० लारेंस ने अपने लेख में किया है-'उसका तरीका यह था कि वह पंडितों को मारकर, जनेऊ उतरवा कर, जनेऊओं की उसने गठरी बंधवाई उनका वजन ७ मन हुआ।' इस में मरने वाले पंडितों की गिनती नहीं की जाती थी, अपितु जनेऊ के वजन से उनका अनमान लगाया जाता था। तब पंडितों के शवों को डल झील मे डाल दिया जाता था।

उसके बाद आजाद खान नामक सुल्तान हुआ यह दो ब्राह्मणों को एक बोरी में भरकर डल झील में डुबो देता था। इसने कश्मीर में जाजिया कर भी लगाया। इसके बाद मीर हजर हुआ, यह दुष्ट भी ब्राह्मणों को घास के थैले की अपेक्षा चमड़े के थैले में भरकर झील में डुबो देता था। इसने शिया मुसलमानों पर भी भयंकर अत्याचार किये।

इसके बाद महमूद खान सुलतान हुआ। यह दुष्ट भी स्त्रियों पर बलात्कार के लिये बदनाम था। इससे बचाने के लिये हिन्दू अपनी लड़कियों के सिर मुंडा देते थे और उनका सौंदर्य बिगाड़ने के लिये उनकी नाक भी काट देते थे।

१८१९ में महाराज रणजीत सिंह ने पंजाब और कश्मीर के मुसलमानों से मुक्त कराया। १८४६ ई० तक कश्मीर पर सिक्खों का अधिकार रहा।

१७५८ ई० में कश्मीर पर रणजीत डोगरा का अधिकार हो गया। १७८० ई० में रणजीत

देव की मृत्यु हो गई।

तब कश्मीर की गद्दी के लिये झगड़े प्रारम्भ हो गय। इसी तरह तीन पीढियां बीत गई। महाराजा रणजीत सिंह के तीन व्यक्ति सेनापति रहे। ये तीन सेनापति गुलाब सिह, ध्यान सिंह और सुचेत सिंह थे। महाराजा रणजीत सिंह ने इनकी सेवा से प्रसन्न होकर १८१८ में गुलाब सिंह को जम्मू का राज सौंप दिया ध्यान सिंह को पुंछ और चिंबल का राज दिय। सुचेत सिह को रामनगर का राजा बनाया। आगे चलकर सुचेत सिंह और ध्यान सिंह युद्ध में मारे गये । तब गुलाब सिंह ही तीनों राज्यों का राजा बन गया। १८४६ में अंग्रेज सिक्ख युद्ध में अंगेज विजयी हुए। उन्होंने पंजाब के सत्ताधारियों से एक करोड़ रुपया और बड़ा भूभाग मांगा। तब राजा ने व्यास और सिंध प्रदेश देने की पेशकश की, क्योंकि एक करोड़ रुयये देने में वह असमर्थ था। उस समय भारत का गवर्नर जनरल हाकिन्स था, उसको यह सौदा नहीं जचा। उस समय गुलाब सिंह एक करोड़ रुपया देने को को तैय्यार हो गया। गुलाब सिंह ने अंगेजों के आगे शर्त रखी कि उसे जम्मू-कश्मीर का स्वतन्त्र राजा बनाया जाय। यह सन्धिपत्र १८४६ ई० में अमृतसर में लिख गया था। इस प्रकार जम्मू-कश्मीर एक पृथक् स्वतंत्र राज्य बना।

जम्मू क्षेत्र कश्मीर के दक्षिण में है ,पूर्व में लद्दाख, उत्तर में वल्टिसतान है, पश्चिम में गिलगित, मुजफ्फराबाद, रैखी-पुंछ, मीरपुरा थे। इसका क्षेत्रफल ४३०७०००० (तैतालीस लाख सत्तर हजार) था।

चौदहवीं शताब्दी के आक्रमणों के बाद लोग मुसलमान बनते चले गये, धर्म परिवर्तन और स्त्रियों को भ्रष्ट करना शताब्दियों तक चलता रहा। स्वराज्य प्राप्ति के समय कश्मीर हिन्दू राजा के हाथ में था, परन्तु ७७ प्रतिशत प्रजा मुसलमान थी। राजा ने हिन्दू संस्कृति की पुन: स्थापना के लिये, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में, मुसलमानों को शुद्ध करने का प्रयास किया, किन्तु काशी के पंडितों ने उस शुद्धि का विरोध किया। कर्बेल ने इस घटना का विवरण 'डेंजर इन कश्मीर' पुस्तक के पन्द्रह (१५) पृष्ठ पर किया है।

श्री बाल शास्त्री हरदास ने, डा० मुंजे का चरित्र लिखा है। उसके खण्ड-१ पृष्ठ ५१ पर इस प्रकार वर्णन है:-

'मुसलमान प्रमुखों ने राजा से प्रार्थना की। हम मुसलमानी अत्याचारों से डरकर हिन्दू से मुसलमान बन गये थे। अब आप हिन्दू राजा हैं, हम आपसे हिन्दू धर्म में लेने की प्रार्थना करते हैं। आप जो भी आदेश देंगे हम वही प्रायश्चित करेंगे। उस समय कुटुम्ब के कुटुम्ब हिन्दू बनना चाहते थे।'

जब काशी के पंडितों ने शुद्धि का विरोध किया तब राजा ने स्वयं शुद्धि का प्रबन्ध किया और घोषणा करवा दी कि जो कोई भी व्यक्ति हमारे शुद्धियज्ञ में सम्मिलित होगा, वह हिन्दू माना जायेगा। अब पुरोहित जोकि ब्राह्मण थे उसने शुद्धियज्ञ में रोड़ा अटकाया। उसने राजा को धमकी दी कि यदि आप यह शुद्धि

का अधर्म करेंगे तो मैं झेलम नदी में कूदकर आत्महत्या कर लूंगा और वह मूर्ख पुरोहित ऐसा कहकर झेलम नदी में कूद पड़ा। भोला राजा ब्रह्महत्या के पाप से डर गया। राजा ने उस मूर्ख पुरोहित को नदी से बाहर निकाला यज्ञ स्थगित करना पड़ा। कश्मीर के वे हिन्दू बनने के इच्छुक नागरिक मुसलमान ही रह गये।

१८५७ ई० में गुलाब सिंह का देहान्त हो गा। १८८५ तक रणवीर सिंह गद्दी पर रहा। १९१५ ई० से १९४७ तक महाराजा हरिसिंह का राज रहा। देश स्वतंत्र होने पर कश्मीर को भारत में मिलाने की घोषणा हुई थी।

हिन्दुस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की दृष्टि से कश्मीर का बड़ा महत्त्व है। जब कश्मीर का विलय स्वीकृत हो गया तब जवाहरलाल नेहरू ने यह घोषणा कर दी कि जैसे ही पाकिस्तान का आक्रमण समाप्त हो जायेगा, कश्मीर की जनता जनमत के आधार पर भारत या कश्मीर में शामिल हो सकती है। उसके बाद नेहरू अपनी मूर्खता से कश्मीर के मामले को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गये और भारत की आंतरिक समस्या को विश्व के हाथों सौंप दिया और तभी से कश्मीर का झगड़ा आज तक चल रहा है। कश्मीर को लेकर भारत-पाक के बीच बड़े युद्ध भी हो चुके हैं, जिनमें भारत के जन-धन की बड़ी हानि हो चुकी है। बीसवीं सदी में कश्मीर के मुसलमानों ने कश्मीर के पंडितों की बड़े पैमाने पर हत्याएं की। स्त्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार किये स्त्रियों का बड़े पैमाने पर अपहरण हआ, उनके घर लूटकर जला दिये। तब बचे हुए पंडितों के परिवार किसी प्रकार जान बचाकर दिल्ली पहुंचे और दिल्ली में निराश्रित और विस्थापित बहुत वर्षों तक दु:ख भोगते रहे। यहां इन्हें मुसलमान परस्त कांग्रेस सरकार ने राशनकार्ड आदि तथा नागरिकता भी प्रदान नहीं की।

मोदी सरकार ने कश्मीर से धारा ३७० हटाई और इन विस्थापित पंडितों को नागरिकता भी प्रदान की।

इस सार घटाक्रम में एक बात ध्यान देने योग्य है कि जिस समय कश्मीर की मुसलमान प्रजा राजा से प्रार्थना करके हिन्दू बनना चाहती थी, तब इन्हीं पंडितों के पूर्वज पंडितों ने ही कश्मीर के मुसलमानों को हिन्दू नही बनने दिया और राजा द्वारा किये जा रहे शुद्धि यज्ञ को रुकवा कर जो महापाप किया था उस महापाप का प्रायश्चित उन रूढ़िवादी पंडितों के उत्तरवर्ती सन्तानों को महाकष्ट भोगने के रूप में करना पड़ा। यदि मूर्ख राज पुरोहित उस समय महाराजा को शुद्धियज्ञ से न रोकता तो न तो मुसलमान ही कश्मीर में बहुमत में रहते और न ही वर्तमान कश्मीरी पंडितों को ये भयंकर दु:ख सहन पड़ते।

बंगाल का काला पहाड

बंगाल का काला पहाड़ इतिहास में प्रसिद्ध है। यह एक बंगाली ब्राह्मण युवक था, जिसका नाम कालीपाद था। वह बड़ा सुन्दर और बलवान् था। वह प्रतिदिन प्रात: नदी में स्नान करके एक धोती वस्त्र धारण किये नवाब के महल

के पास से जाया करता था। उसको देखकर ढाका के नवाब की लड़की उस ब्राह्मण युवक पर मोहित हो गई और उसने अपने पिता से कहा कि मैं इसी युवक से विवाह करूंगी। नवाब के बहुत समझाने पर भी जब वह नहीं मानी तब नवाब ने कालिपाद को बुलाकर कहा कि तू मेरी बेटी से शादी करले, किन्तु कालिपाद ने समाज के बहिष्कृत होने के डर से उस लड़की के साथ विवाह करने से मना कर दिया। तब नवाब ने क्रोध में आकर उस युवक को फांसी देने का आदेश दिया तथा उसे जेल में डलवा दिया। किन्तु फांसी वाले दिन वह लड़की भी फांसी के स्थान पर आ पहुंची और कालिपाद के साथ स्वयं भी मरने को उद्यत हो गई। नवाब ने लड़की का सच्चा प्रेम देखा तो कालिपाद को फांसी से मुक्त कर दिया। कालिपाद ने जब लड़की का अपने प्रति प्रेम देखा तो उसका हृदय बदल गया और वह नवाब की लड़की से विवाह करने को तैयार हो गया किन्तु कालिपाद के कुटुम्ब और बिरादरी वालों ने उसे बहिष्कृत कर दिया। कालिपाद ने अपनी बिरादरी वालों से बहुत अनुनय विनय की और कहा कि मैं उस लड़की को शुद्ध करके हिदू बना लूंगा और प्रायश्चित रूप में बिरादरी जो भी दण्ड देगी उसको स्वीकार करूंगा किन्तु बिरादरी वालों अर्थात् ब्राह्मणों का मन नहीं पसीजा और उसे बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया। तब वह कालिपाद मुसलमान बन गया और उसका नाम कालेखां रक्खा गया। तब नवाब ने कालेखां को कुछ सेना भी दे दी। कालेखां जाति बहिष्कृत करने से प्रतिशोध की ज्वाला में जल रहा था। उसने लाखों हिन्दुओं की हत्या की और लाखों को मुसलमान बनाया। उसका नाम काला पहाड़ पड़ा। यदि उसकी बिरादरी वाले ब्राह्मण नवाब की लड़की को शुद्ध कर लेते तो बंगाल में इतने मुसलमान न होते।

सम्पर्क सूत्र-
१११/१९, आर्यनगर, झज्जर
मो० नं० ९९९६२२७३७७

आर्य दैनन्दिनी-२०२२ (डायरी)

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व अपना पता भेजें, जिससे कि सही नम्बर प्रकाशित हो सके। कई विद्वानों के नम्बर बदल गये हैं, अत: आप सभी से निवेदन है कि आप सब अपना नया नम्बर और पता भेजें। यह आप ३१ अगस्त २०२१ तक पत्र द्वारा या ईमेल arya prakashan @gmail. con अथवा 9868244958 पर वाट्सऐप द्वारा भेजने की कृपा करें। जिससे भली प्रकार से आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके।

सम्पर्क सूत्र-संजीव आर्य (प्रबन्धक)
आर्य प्रकाशन, ८१४ कुण्डेवालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-११११०००६
मो० 9868244958
ईमेल arya prakashan @gmail com

गुरुकुल झज्जर की विशेषता

- प्राचीन आर्ष प्रणाली के द्वारा वेदादि शास्त्रों और संस्कृत भाषा के पठन-पाठन को जीवित बनाये रखना।
- ब्रह्मचर्य के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जनता में आसन-प्राणायाम आदि का क्रियात्मक प्रचार करना।
- स्कूलों, कॉलजों, ग्रामों और नगरों में यज्ञ तथा धर्मोपदेशों के द्वारा युवा पीढ़ी को उत्साहित करके संस्कारवान् बनाना।
- संस्कृत-हिन्दी के जनोपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन और वितरण करना।
- भारत के प्राचीन इतिहास के अन्वेषणार्थ पुरातत्व संग्रहालय के आधार पर छात्रों को शोधकार्यार्थ प्रेरित करना।
- आयुर्वेदिक औषधालय और चिकित्सालय के द्वारा औषध तैयार करके रुग्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्यलाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना।
- प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से कष्टसाध्य रोगों का उपचार करना।
- अतिथि के रूप में पधारने वाले परोपकारी, विद्वान्, संन्यासी आदि सज्जनों का नि:शुल्क रूप में भोजन-आच्छादन से यथेष्ट सत्कार करना।
- वैदिक संस्कृति सभ्यता और गोरक्षा आदि पर यदि कोई आपत्ति आती है तो उसके निराकरण के लिये सत्याग्रह आदि क्रियाकलापों के द्वारा यथासंभव आपत्ति को दूर करना।
- जनता में भ्रम और अज्ञानवश अवैदिक मान्यताओं और पाखण्डों से होने वाली हानि दिखाकर लोगों को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना।
- गुरुकुल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक परिश्रम से होने वाले कार्यों के प्रति भी जागरूक और उत्साहित करना।
- लेखक के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष आदि ग्रन्थों के भाष्यकार भी इस गुरुकुल की देन हैं।
- योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, कुश्ती, मल्लखम्भ, लाठी, भाला, तलवार आदि विविध प्रकार के भारतीय व्यायाम की शिक्षा देने वाले स्नातक भी इसी गुरुकुल के स्नातक हैं।
- वेद, दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण, छन्द, काव्य, आयुर्वेद, इतिहास, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम और समाज सुधार सम्बन्धी संस्कृत-हिन्दी के सैकड़ों ग्रन्थों का प्रकाशन गुरुकुल की ओर से निरन्तर चलता रहता है।

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 100 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : 1 किलो 300 रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : 200 रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) "	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) "	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प "	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह) १-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) "	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-HP/RTK/85-B/2020-22

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्थान _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।